इच्छा शक्ति : केदारघाटी के किसानों ने रवांई घाटी आकर सीखे सब्जी उत्पादन के गुर और जानी जैविक खाद के प्रयोग की विधि

नम आंखों से उठा ली कुदाल

राधाकृष्ण उनियाल, पुरोला

- रवांई घाटी के गांवों में भ्रमण कर किसानों से ली उत्पादन व विपणन की जानकारी

मन के हारे हार है मन के जीते जीत। इसी कहावत को चरितार्थ करने को यहां के किसानों ने अपने बचे हुए खेतों में आजीविका का साधन के लिए उपाय ढूंढ लिया। वर्ष 2013 में उत्तराखंड में आई आपदा में जहां कई लोग अपनों से बिछड़ गए तो वहीं यहां के बाशिदों ने भी कम दुख नहीं झेले। सबसे ज्यादा इसकी मार यहां के किसानों पर पड़ी और आजीविका का एकमात्र साधन सीढ़ीनुमा खेत आपदा की भेंट चढ़ गए। लेकिन केदारघाटी के किसानों के हौसलों को आपदा भी डिगा नहीं पाई और अपने उजाड़ हो चुके खेतों को आबाद करने व आजीविका के लिए इन्होंने रवांई की घाटी का रुख किया और यहां के किसानों से नगदी फसलों के बारे में जानकारी ली।

लोक विज्ञान संस्थान की ओर से ग्राम स्वराज समिति के 12 काश्तकार रवांई घाटी पहुंचे और इन्होंने जीवन को दोबारा पटरी पर लाने व उजाड़ हो चुके खेतों को आबाद करने की आशा के साथ रवांई घाटी का भ्रमण कर नकदी फसल व फलों के उत्पादन के गुर सीखे। इन किसानों ने यहां पुरोला, मोरी व नौगांव प्रखंड के चंदेली, नेत्री, खलाड़ी, पुरोला, स्योरी, नौगांव, तुनाल्का व सुनारा गांवों का भ्रमण किया। इस दौरान उन्होंने सब्जी उत्पादन में अग्रणी इन गांवों में मटर टामाटर, गोभी, बीन, शिमला मिर्च, बंदगोभी, अदरक, हल्दी, आड़ू, पुलम, खुमानी आदि के उत्पादन के तौर तरीके जाने। किसानों ने जहां जैविक खाद का प्रयोग के प्रयोग से तैयार बैमौसमी सब्जी नगदी फसल के उत्पादन के बारे में स्थानीय किसानों से जानकारी ली। वहीं तैयार फसलों को बाजार पहुंचाने व विपणन की भी जानकारी ली। टीम लीडर कुलदीप उनियाल ने बताया कि लोक विज्ञान संस्थान आपदा त्रासदी से जूझ रहे रूद्रप्रयाग, बागेश्वर, ऊखीमठ क्षेत्र के 25 गांवों के किसानों को आत्मनिर्भर बनाने के प्रयास कर रहा है। जिसके तहत बैमोसमी सब्जी, नगदी फसलों के बारे में जानाकारी देना स्वरोजगार के दिशा में सफल बनाना संस्थान का उद्देश्य है।

पुरोला के खलाड़ी गांव में युद्धवीर सिंह रावत के सब्जी उत्पादन को देखते रवांई भ्रमण पर आये केदारघाटी के किसानों का दल।